શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/O. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

❖❖❖ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ❖❖❖

એનરોલમેન્ટ નંબર हिन्दी

५ નામ ______________________

વિદ્યાર્થીનું નામ ______________________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	व्यसन
(૨)	विचारशक्ति
(૩)	~~[illegible]~~
(૪)	आचार
(૫)	डायणा
(૬)	पुत्ररत्न
(૭)	स्वार्थ
(૮)	सिद्धगति
(૯)	विनय
(૧૦)	शांति
(૧૧)	छिद्र
(૧૨)	शांतिनाथ
(૧૩)	युगपद
(૧૪)	यश
(૧૫)	अशुभ
(૧૬)	विशिष्ट
(૧૭)	विकलेन्द्रिय
(૧૮)	अनीकोगरीक
(૧૯)	बीज
(૨૦)	लाभांतराय

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	क्रूरता
(૨)	मुरति
(૩)	यान
(૪)	शानी
(૫)	काय
(૬)	गमनागमन
(૭)	परस्त्रीगमन
(૮)	धनमित्र
(૯)	पाप
(૧૦)	पेथडशा
(૧૧)	हिंसा
(૧૨)	श्री अरनाथ
(૧૩)	कपोत
(૧૪)	आलोचना
(૧૫)	लोभ

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	मच्छर
(૨)	दूसरे में नव
(૩)	सुखेम
(૪)	स्थिर
(૫)	ज्ञाति
(૬)	वर्ण
(૭)	अधिकरणिकी
(૮)	स्वर्ग में
(૯)	तिर्यंच
(૧૦)	सामुदानिकी
(૧૧)	ऊन
(૧૨)	अविरत
(૧૩)	लोकप्रिय
(૧૪)	अप्रत्याख्यानिकी
(૧૫)	मार्ग दिखानेवालोंको
(૧૬)	तीड
(૧૭)	अशुभ
(૧૮)	वर्तमानकालमें
(૧૯)	पच्चीस
(૨૦)	मदिरा

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	७	(૬)	१
(૨)	५	(૭)	१०
(૩)	८	(૮)	३
(૪)	६	(૯)	४
(૫)	९	(૧૦)	२

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	१८
(૨)	७
(૩)	६
(૪)	३५
(૫)	९
(૬)	~~४२~~ २
(૭)	~~५२~~ ४२
(૮)	~~७०४~~ ८२
(૯)	७००
(૧૦)	२५

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ✗		પ્રશ્ન-૭
(૧)	✓	(૧)	१२
(૨)	✗	(૨)	२०
(૩)	✗	(૩)	८
(૪)	✗	(૪)	१०
(૫)	✗	(૫)	१६
(૬)	✓	(૬)	६
(૭)	✓	(૭)	२२
(૮)	✗	(૮)	१३
(૯)	✗	(૯)	९
(૧૦)	✓	(૧૦)	४

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	કુલ ગુણ
	+	+	+	+	+	+	+ =	

રીમાર્ક ______________________ તપાસનારની સહી ______________________

[illegible]

राजा की इन्द्र ने सभा में प्रशंसा की। उसे एक देव ने सहन न हुआ उसने कबूतर और बाज पक्षी का रूप बनाया। कबूतर ने दयनीयरूप में राजा की शरण ली। तभी बाज ने अपना भक्ष्य कबूतर की मांग की।
लेकिन शरणागति में आने वाले को सौंपने की मना कर दी। और अपने शरणागत के वजन का मांस देने का कर्तव्य बताया।
लेकिन देवमाया से कबूतर का वजन बढ़ता गया तो खुद राजा तराजु में बैठ गये। यह देखकर देव क्षमा मांगकर राजा की प्रशंसा करता हुआ चला गया। राजा ने अपने भाई, सातसौ पुत्र और चार राजाओं के साथ दीक्षा ली। वीश स्थानक की आराधना करके तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया।

---

2) निद्रा :- सुखपूर्वक जाग सके वो निद्रा
निद्रा-निद्रा :- दुःख पूर्वक जाग सके वो निद्रा
प्रचला :- बैठे बैठे - व खडे खडे निंद करे वह निद्रा प्रचला
प्रचला-प्रचला :- चलते चलते निद्रा लेवे वह प्रचला - प्रचला
थिणद्धि :- दिन में सोचे हुए कृत्यों को निद्रावस्था में रात्रि में कर आवे। प्रथम संघयण वाले जीव को वासुदेव से आधा बल निंद में होता है। अन्य सामान्य व्यक्ति में वर्तमान में हो उससे 7-8 गुना ज्यादा नींद होता है वह (इसे) थिणद्धि नि[illegible])

---

3) चोरी का दूषण आज बढ़ता जाता है। प्रमाणिकता घटती जा रही है। व्हाईटकॉलर चोर बढ़ते जा रहे हैं। जहाँ से मिले वहाँ से पैसा खाने की वृत्ति बढ़ती जा रही है। अच्छे अच्छे लोगों के हाथ भी इस पाप में लिप्त है। यह व्यसन पैसों की आसक्ति बढ़ाता है और एक पाप अनेक पापों को जन्म देता है।
शिकार का व्यसन कम दिखायी देता है। परन्तु खुद के सुख के लिए विविध वस्तुओं के लिए जीव अधिक जीवों को मारता जाता है। स्वाद के लिए.. विदेश चलन प्राप्त करने के लिए कत्लखाने खोले जाते हैं। निर्दोष जीवों के, मूक जीवों के शिकार किये जाते हैं। यह शिकार ही है।

---

4) सबकुछ जानने वालों को तथा सब कुछ देख सकने वालों को, उपद्रव से रहित, स्थिर, व्याधि और वेदना से रहित, अंत रहित, कदापि क्षय नहीं पाने वाले कर्मजन्य पीडाओं से रहित, जहाँ जाने के पश्चात संसार में वापस फिरना नहीं होता ऐसा तथा सिद्ध हुए जीवों की जहाँ गति होती है वो सिद्धगति नाम वाले स्थान को प्राप्त कर लिया है, तथा जिन्होंने सात प्रकार के भय को जीता है, उन जीनों को नमस्कार हो ..(9)
जो भूतकाल में सिद्ध हुए हैं, जो भविष्यकाल में सिद्ध होने वाले हैं, और जो वर्तमान में अरिहंत रूप विद्यमान हैं उन सभी को मन वचन काया द्वारा इन तीन प्रकार से वंदन करता हूं। (10)

---

5) चिलातीपुत्र मुनि के स्थान पर ध्यानस्थ खडे उपशम, विवेक, संवर पर चिंतन करते हैं। क्रूरता मानवी की विचार शक्ति का नाश करता है। मानवी आवेश में भान भूलकर विवेक चुक जाता है। संवर की साधना दूर रह जाती है। यह सब बातों का ख्याल चिलातीपुत्र को आते ही गाडी अशुभ से शुभ की ओर प्रयाण करती है।
प्रथम क्रूरता पर विजय, कषाय मंद और शांतिपूर्वक चिंतन की दुनिया में आगे बढ़े। रागद्वेष में शांति नहि अशांति है यह ख्याल आते ही सुषमा का मस्तक और तलवार का त्याग किया। उपशम से विवेक में और विवेक से संवर में प्रवेश किया। और अंत में